एक योद्धा की आन्तरिक प्रशान्तता

मॉर्गन हूपर द्वारा पुनर्लिखित

हिरोयूकी ने 'चावान' यानी चाय पिलाने के कटोरे में गरम पानी डाला। यह कटोरा पिछली चार पीढ़ियों से उसके परिवार में था। उसका जीर्ण-शीर्ण सौन्दर्य, उसकी अपूर्ण पूर्णता को देखकर वह मुस्कराया — कटोरे की सतह पर पड़ी रेखाएँ, उसका टेढ़ा-मेढ़ापन, उस पर आई हल्की दरारें — सभी कुछ एक दास्ताँ बयान कर रहे थे। उसने बड़े ध्यान से अपने बाँए हाथ में कटोरे को पकड़ा और अपने दाएँ हाथ में लिए एक सफ़ेद कपड़े से उसे पोंछकर सुखाया। फिर उसने बाँस का एक चम्मच उठाया, उसमें माचा की पिसी हुई पत्तियाँ दो बार भरकर कटोरे में डालीं और उसमें थोड़ा और गरम पानी मिला दिया। उसने धीरे-से पानी को हिलाया; कमरा एक सन्तुलित-सी खट्टी-मीठी खुशबू से भर गया। आख़िर में उसने अपने पहले मेहमान के आगे सिर झुकाया और उनके सामने कटोरे को प्रस्तुत किया। इस तरह, पूरे आनन्द और निपुणता के साथ, बड़ी सहजता से हिरोयूकी ने निर्धारित रस्म 'ओतेमाए' को पूरा किया जो कि जापान में चाय बनाने और परोसने की औपचारिक रस्म है।

सामन्तवादी जापान का शहर, एडो—जिसे आज टोकियो के नाम से जाना जाता है — चहल-पहल से भरा एक महानगर था। व्यापारी और कलाकार, मछुआरे और किसान, फेरीवाले, निठल्ले लोग और हर तरह के लोग, भीड़-भड़ाके वाली गलियों और बाज़ारों में घूम रहे थे। शहर के शोर-शराबे से बचने के लिए, शाही दरबारीजन अकसर बगीचे के रास्ते से एक शान्त चाय की दुकान पर आ जाते। वहाँ वे चाय के उस कमरे के सादगी भरे, सुसंस्कृत वातावरण का आनन्द लेते; वे फूलों की सजावट, 'इकेबाना' की कलात्मकता को सराहते; और दीवारों पर लटकी, 'काकेजीकू' की सुन्दर, हस्तलिखित सिखावनियों पर चिन्तन-मनन करते। वे गहरी श्वास लेते, परोसी गई चाय की चुस्कियाँ लेते और अपने मन को प्रशान्ति में निमग्न हो जाने देते।

हिरोयूकी ने अपना पूरा जीवन, अपने पूर्वजों की कला का अध्ययन करते हुए बिताया था और अब बावन वर्ष की प्रौढ़ आयु में उसकी गिनती एडो के चाय बनाने में माहिर लोगों में होने लगी थी। उसने उच्च पदाधिकारियों, रईस व्यापारियों और प्रतिष्ठित दरबारियों के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित की थीं और हमेशा हर आगन्तुक की ओर पूरा ध्यान व उसे सम्मान दिया था।

उस दिन, जापान के पाँच 'समुराई' यानी सेनानायक भी हिरोयूकी के अतिथि थे। जापानी समाज में इन समुराई का बड़ा रुतबा था, वे सेवा और शौर्य के जीते-जागते नमूने थे। उनका सम्मान भी होना

चाहिए था और उनसे डरना भी ज़रूरी था—क्योंकि हिरोयूकी को अच्छी तरह पता था कि उनके प्रति की गई छोटी-सी ग़लती की भी बहुत बड़ी सज़ा मिल सकती है।

जब चाय बनाकर उनके सामने प्रस्तुत की गई तो पहले चार समुराई ने बड़ी विनम्रता से चाय को स्वीकार किया। फिर हिरोयूकी पाँचवें समुराई, इशिदा की ओर मुड़ा जो अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए बदनाम था। हिरोयूकी उसके सामने आदर से झुका और चाय देने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। इस बात से बेख़बर, इशिदा ने ठीक उसी समय, एक तीखा तंज कसते हुए अपना हाथ, अपने एक साथी की ओर बढ़ाया। हिरोयूकी सतर्क था, समुराई के हाथ से टकराने से बचने के लिए वह फ़ौरन एक किनारे हुआ; पर ऐसा करते समय गरम चाय की एक बूँद समुराई के बढ़े हुए हाथ पर गिर ही गई।

पीछे हटते हुए, समुराई गुस्से से चिल्लाया, "बेवकूफ़ आदमी! यह क्या कर दिया!"

हिरोयूकी ने घुटने टेककर उससे माफ़ी माँगी; पर वह भय से काँप उठा क्योंकि अब भी भीषण क्रोध में जल रहे समुराई ने उछलकर उसके 'किमोनो' [पोशाक] को सामने से पकड़ लिया।

"मूर्ख! तुम एक समुराई का सम्मान इस तरह करते हो! इस अपमान के लिए मैं अभी, इसी-समय क़ानूनन तुम्हारी गरदन उड़ा सकता हूँ—पर . . .", कहते-कहते समुराई रुक गया और उसके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान आ गई। ". . .तुम्हारा डर देखकर मुझे मज़ा रहा है। कल सुबह, सूरज उगने से पहले, तुम हथियार लेकर शहर के बाहर आ जाओ और जंगल में आकर द्वन्द्वयुद्ध करो। अगर तुम नहीं आए तो तुम्हारे परिवार की इज़्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी।"

ऐसा कहकर, समुराई दरवाज़े से बाहर चला गया। बाकी के चार समुराई भी उसके पीछे-पीछे बाहर चले गए।

हिरोयूकी ने दोपहर भर के लिए अपनी चाय की दुकान बन्द की और घर चला गया। उसके अगले दो घण्टे बड़ी ऊहापोह में बीते। उसने जीवन में कभी हथियार नहीं उठाया था! उसे पता था कि समुराई के साथ द्वन्द्वयुद्ध करना महज़ नादानी होगी। इसी उधेड़बुन में खोया, वह इससे बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ता रहा।

"शायद मैं मेजिस्ट्रेट को अपनी परिस्थिति समझा सकूँ . . . यह भी कर सकता हूँ कि मैं किसी और समुराई की मदद ले लूँ जो मेरे स्थान पर लड़ सके . . . या, या शायद मैं . . ."

हर गुज़रते पल के साथ, उसे अपनी इस असहाय परिस्थिति से बाहर निकलने के रास्ते बन्द होते दिखने लगे; वह फँस चुका था। आख़िरकार, उसने अपने मन की भूलभुलैया में भटकना बन्द कर दिया।

“नहीं, नहीं, अब कुछ नहीं हो सकता। भले ही मेरी जान क्यों न चली जाए, मुझे अपने परिवार की आन बचानी ही चाहिए। मुझे उनसे मिलने जाना ही होगा।” इन शब्दों के बाद उसके मन में जो ख़ामोशी छा गई, उसमें जितनी निराशा थी उतना ही दृढ़ निश्चय भी। दलदल में फँसे होने की उस दशा में, हिरोयूकी के मन में एक विचार कौंधा।

“ओटा सेनसेइ, समुराई कला के प्रशिक्षक . . .हाँ, मुझे इन वृद्ध शिक्षक के पास जाना चाहिए जो इसी गली में रहते हैं। वे समझदार व दयालु हैं। अब बस उन्हीं का आसरा है।”

हिरोयूकी जानता था कि उम्मीद बहुत कम है, फिर भी वह सेनसेइ के घर गया और धीरे-से उनका दरवाज़ा खटखटाया।

ओटा सेनसेइ भूरे रंग के साधारण-से कपड़ों में बाहर आए। अपनी उलझन के बीच भी, हिरोयूकी इन वृद्ध योद्धा के विनम्र व सहज व्यक्तित्व की प्रशंसा किए बिना नहीं रह पाया।

हिरोयूकी ने अपना सिर झुकाया। “ओटा सेनसेइ, दोपहर के समय आपको परेशान करने के लिए मुझे क्षमा करें, पर मैं भारी संकट में हूँ. . .”

हिरोयूकी अपनी मुसीबत के बारे में बताता रहा और सेनसेइ सुनते रहे। बीच-बीच में वे “हूँ. . .हूँ” करते रहे। फिर वे बोले, “इशिदा जैसे घमण्डी मसख़रे ही समुराई परम्परा पर दाग़ लगाते हैं, उसे बदनाम करते हैं। श्रेष्ठ योद्धाओं में से दो-चार ऐसे भी होते हैं जो अपने अहंकार और बड़बोलेपन में ही खोए रहते हैं।”

हिरोयूकी सिर झुकाकर बोला, “ओटा सेनसेइ, क्या यह सम्भव है कि आप मेरी मदद कर सकें? क्या ऐसी कोई गुप्त तकनीक, कोई तरक़ीब है जो मुझे जीत दिला दे?”

ओटा सेनसेइ ने करुणा व स्पष्टता के साथ उत्तर दिया, “तुम तो जानते ही हो, किसी भी कला में निपुणता हासिल करने में पूरा जीवन लग जाता है। एक ऐसा समुराई जो सारा जीवन युद्ध करता रहा है, उसे हराना सिर्फ़ एक दोपहर में कैसे सिखा सकता हूँ मैं? अब तुम बस इतनी ही आशा रख सकते हो कि अपना बचा हुआ जीवन इ़ज़्ज़त से बिता सको।”

हिरोयूकी ने गहरी साँस ली और बोला, “तो अब जो मेरे भाग्य में है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ।”

ऐसा प्रतीत हुआ कि सेनसेइ इस निर्भीक उत्तर को सुनकर प्रसन्न हुए। उसी क्षण उनके मन में एक शानदार विचार आया और उनकी आँखें चमक उठीं। वे बोले, "हिरोयूकी, इतने वर्षों से मैं यहाँ एडो में रह रहा हूँ और हमेशा से तुम्हारी चाय की दुकान के बारे में सुनता आया हूँ, पर वहाँ आने का मौक़ा कभी नहीं मिला। तुम्हारे बारे में जानते हुए भी, यह तो मेरे लिए बड़े नुकसान वाली बात होगी कि मैं अब तक तुम्हारी कला को नहीं देख पाया हूँ। तुम्हारे कुछ घण्टे बर्बाद होंगे, पर क्या तुम एक बूढ़े आदमी की इच्छा पूरी करोगे?"

बिना किसी झिझक के हिरोयूकी ने उत्तर दिया, "ओटा सेनसेइ, इस धरती पर अपने अन्तिम दिन पर आपकी सेवा करने को मैं अपना सबसे बड़ा सौभाग्य समझूँगा।"

सेनसेइ मुस्कराकर बोले, "तो फिर करो तैयारी। मैं जल्दी ही आऊँगा।"

एक घण्टे बाद, ओटा सेनसेइ सड़क पर टहलते हुए, बगीचे के रास्ते से होकर हिरोयूकी की चाय की दुकान पर पहुँचे। जब वे प्रवेश-द्वार की मेहराब पार कर रहे थे तो हिरोयूकी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत और अभिवादन किया। हिरोयूकी ने एक बार फिर सिर झुकाया और सेनसेइ ने भी प्रत्युत्तर में उसी तरह अभिवादन किया, क्योंकि चाय पेश करने की रस्में शुरू हो गई थीं।

ओटा सेनसेइ जब हिरोयूकी को काम करते देख रहे थे तो उसमें आया बदलाव उनकी नज़र से न छिप सका। हिरोयूकी के हाव-भाव में, उसके साँस लेने, उसके तौर-तरीक़ों में वैसी ही प्रशान्तता, स्थिरता व एकाग्रता आ गई थी जैसे झील के किनारे खड़े बगुले में होती है। उसके सूक्ष्म कार्यकलाप इस शान्ति से सिक्त थे और जैसे ही उसने पहले प्याले में चाय डाली, चाय के उस कक्ष में प्रशान्तता का भाव छा गया।

"हेइजोशीन," ओटा सेनसेइ ने चाय का प्याला स्वीकार करते हुए कहा।

"जी?" हिरोयूकी ने पूछा क्योंकि उसे यह शब्द नहीं मालूम था।

"हेइजोशीन, यानी योद्धा की प्रशान्त अवस्था, वह शमस्थिति जिसे वह जीवन के उतार-चढ़ावों और अशान्ति के बावजूद बनाए रखता है। भले ही दुनिया जल रही हो, पर उस स्थिति में, मन शान्त होता है; हृदय शान्त होता है।"

"क्षमा करें सेनसेइ, मैं अब भी नहीं समझा।"

“तलवार का एक वार, सौ वारों जैसा बन जाता है। एक कला में महारत हासिल कर लेने से, अपने आप में एक अदम्य विश्वास का भाव जग जाता है। इससे समस्त कलाओं में महारत हासिल कर लेने के लिए द्वार खुल जाता है।”

फिर सेनसेइ ने झुककर, हिरोयूकी के पास आते हुए उसकी आँखों में झाँका और कहा, “जिस व्यक्ति ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी थी, वह दुविधा से भरा हुआ था। पर, अभी जब मैंने तुम्हें अपनी कला को प्रस्तुत करते हुए देखा तो मैंने उस प्रसिद्ध विशेषज्ञ को देखा जिसके बारे में मैं बहुत लम्बे समय से सुनता आ रहा हूँ। ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुम पहले से ही नहीं जानते और जिसे मैं तुम्हें सिखा सकूँ। कल सुबह तुम्हें यही करना है कि तुम अपनी तलवार वैसे ही खींचो मानो तुम चाय का प्याला पेश कर रहे हो।”

ओटा सेनसेइ जाने लगे तो हिरोयूकी भी बगीचे के घुमावदार रास्ते पर उनके साथ चलने लगा। कुछ क़दम चलने के बाद दोनों रुक गए। उन्होंने ग़ौर किया कि पतझड़ के मौसम के पहले-पहले चिह्न दिखाई दे रहे हैं। हवा में ठण्डक और तेज़ी थी, आस-पास के सभी पेड़ों की लाल-पीली पत्तियाँ पतझड़ की चमकदार रोशनी में सरसरा रही थीं।

सेनसेइ मानो अपने आप से कह रहे थे, “यह उत्कृष्ट जीवन, हवा में गोल-गोल घूमती हुई पत्तियों की तरह क्षणभर में ही आता है और चला जाता है। इसके बीच सब कुछ एक स्वप्न ही है।”

फिर वे हिरोयूकी की ओर मुड़े, उसे एक अतिरिक्त तलवार दी, बताया कि उसे कैसे धारण करना है और फिर यह कहते हुए चले गए, “पूरे जी-जान से लड़ना।”

अगली सुबह वृक्षों के शिखर की पत्तियों में से छनकर आता हुआ स्वर्णिम प्रकाश, जंगल के उस भाग पर पड़ने लगा जहाँ द्वन्द्वयुद्ध होना था। इससे वह पूरा क्षेत्र वृक्षों की आड़ी-तिरछी परछाइयों से भर गया।

उतावलेपन से क़दम बढ़ाता हुआ इशिदा वहाँ पहले से ही मौजूद था। द्वन्द्वयुद्ध के गवाहों के रूप में वहाँ मौजूद समुराइयों और शाही दरबारीजन के सामने शेख़ी बघारते हुए वह बोला, “इस बात की सम्भावना ही नहीं है कि वह कायर यहाँ आएगा। हरगिज़ नहीं आएगा।”

इशिदा यह बात कहकर मुड़ा ही था कि कुछ दूरी पर उसे हिरोयूकी दिखाई दिया। सुबह के प्रकाश में वह एक धुँधली-सी आकृति जैसा प्रतीत होता हुआ, स्थिर क़दमों से उसी की ओर चला आ रहा था।

चाय-कला विशेषज्ञ, हिरोयूकी, समुराई से क़रीब तीस फ़ुट की दूरी पर रुक गया। उसने झुककर, पहले द्वन्द्वयुद्ध के गवाहों का अभिवादन किया और फिर इशिदा का। वह एक शब्द भी नहीं बोला।

इशिदा के मन में क्षणभर के लिए यह विचार आया ज़रूर कि हिरोयूकी कुछ बदला हुआ-सा लग रहा है, पर जल्दी ही उसने इस विचार को मन से निकाल दिया। उसने झुककर गवाहों का अभिवादन किया और फिर हिरोयूकी की ओर देखकर रुखाई से सिर हिला दिया।

साहस का प्रदर्शन करते हुए इशिदा ने अपनी तलवार घुमाई और चिल्लाकर बोला, "तुममें कम से कम इतनी हिम्मत तो है कि इज़्ज़त से मर सको!"

जब हिरोयूकी का हाथ अपनी तलवार की मूँठ पर पड़ा तो उसे ओटा सेनसेइ की दी हुई शिक्षा से आश्वासन मिलता हुआ महसूस हुआ। चाय-कला में पारंगतता प्राप्त करने के वर्षों के दौरान, जिस सूक्ष्मता, प्रशान्तता और दृढ़ता का विकास हिरोयूकी ने किया था, वह उसकी पूरी सत्ता में व्याप्त थी। उसे महसूस हो रहा था कि वह प्रशान्तता की स्थिति में, *हेइजोशीन* में लीन होता जा रहा है। जिस भय का अनुभव उसे पहले हुआ था, अब उसका नामोनिशान भी नहीं था। उसके मन में, श्वास व आत्मा में अब जो रह गया था, वह थी बस, प्रशान्तता।

हिरोयूकी ने धीरे-से, सावधानी और सहजता से अपनी तलवार खींची और अपने प्रतिद्वन्द्वी की ओर चलाई। यह एक ऐसे व्यक्ति की शान्त मुद्रा थी जिसे अपने आप में अटल विश्वास था। फिर, जो भी उसके सामने आने वाला था, उसे खुलेपन से स्वीकार करते हुए, उसने इशिदा के वार की प्रतीक्षा की।

यह देखकर इशिदा को फ़ौरन ही अस्थिरता-सी महसूस हुई। यह, वह व्यक्ति तो नहीं था जिसका उसने इतने उतावलेपन में अपमान किया था। इस समय, जो व्यक्ति उसके सामने था, वह बिलकुल ही अलग था।

हिरोयूकी की आँखों में एकटक देखते हुए इशिदा सावधानी से आगे बढ़ा। इशिदा के हर बढ़ते हुए क़दम के साथ, हिरोयूकी अपनी मुद्रा पर मज़बूती से टिका रहा।

समुराई ने सोचा, "इसे तो कोई डर ही नहीं है। इसकी मुद्रा को कमज़ोर करने के लिए, इसके हौसले को तोड़ने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता।" इशिदा ने काँपते हुए अपनी तलवार म्यान में रख ली।

“मुझे क्षमा कर दो, मुझसे बड़ी भारी ग़लती हो गई। तुम वह व्यक्ति नहीं हो जैसा मैंने तुम्हारे बारे में सोचा था। अब मैं तुम्हें कभी परेशान नहीं करूँगा।” इतना कहकर समुराई, चाय-कला विशेषज्ञ हिरोयूकी और गवाहों के सामने झुका और चला गया।

हिरोयूकी ने अपनी नज़र आकाश की ओर उठाई और पेड़ों के ऊपर से उदय होते हुए सूर्य को देखा।

वह मन ही मन, उन सेनसइ के आगे झुका जिन्होंने उसे उसकी अपनी ही आन्तरिक निपुणता का, एक योद्धा की आन्तरिक प्रशान्तता का मूल्य बताया था।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।